## संपादकीय

# लोककथा की कथा : पूर्वोत्तर संदर्भ

लोक में प्रचलित प्राचीन कथा लोककथा कही जाती है। लोककथा का कोई लेखक नहीं होता, वह किसी मानव- समुदाय की साझी अभिव्यक्ति होती है। उसमें एक समाज के विश्वास,परंपरा, संस्कार,संस्कृति आदि कई पहलू समाहित होते हैं और होते जाते हैं। समय और कथाकार के बदलने से कथा में भी बदलाव आता रहता है। लोककथा में कुछ न कुछ संदेश अवश्य रहता है, जो उस समाज के अनुभव का निचोड़ होता है।लोककथा की विशेषता यह भी है कि एक ही कथा संदर्भ और अंचल भेद से अनेक रूप ग्रहण करती है।

भारत जैसे बहुभाषीय देश में लोककथाओं का प्राचुर्य है। लिपिहीन भाषाओं की लोककथाएँ किसी दूसरी लिपि की मुहताज बनी हुयी हैं या समय के साथ विलुप्त होती जा रही हैं। भारत की अनेक भाषाएँ विलुप्ति के कगार पर हैं। भाषाओं की विलुप्ति के साथ उस भाषा का लोक साहित्य भी विलुप्त हो जाता है। पूर्वोत्तर भारत में यह बड़ी समस्या बनाकर सामने आई है। यहाँ डेढ़ सौ से भी अधिक भाषाएँ हैं। असम की असमीया भाषा की लिपि असमीया है तथा मणिपुर की मणिपुरी भाषा की लिपि मैतै मायेक है। बाकी भाषाओं की लिपि नहीं है। असमीया और मणिपुरी के अतिरिक्त पूर्वोत्तर भारत की तीसरी भाषा बड़ो है, जिसे भारत के संविधान की आठवीं सूची में स्वीकृति दी गयी है। बड़ो की अपनी लिपि नहीं है और संविधान ने उसे देवनागरी लिपि में लिखने का प्रावधान दिया है। इनके अलावा बाकी भाषाओं का साहित्य अधिकतर मौखिक रूप में उपलब्ध है। पूर्वोत्तर के विविध समुदायों के शिक्षित लोग अपने समुदायों के लोक साहित्य को संरक्षित करने में निरंतर प्रयासरत हैं, पर इसके लिए उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

पूर्वोत्तर की लोककथाओं के संकलन का काम मूलतः अँग्रेजी में शुरू हुआ। अंग्रेज जिस दृष्टि से भारत को, खासकर पूर्वोत्तर को देखते थे, उसी दृष्टि को आधार बनाकर यहाँ की लोककथाओं का संकलन किया। परवर्ती समय में लोककथा के भारतीय संकलकों ने भी उन्हीं ग्रन्थों को आधार बनाया। परिणामस्वरूप सौतेली माँ का अत्याचार, नर शिकार, मूँद आखेट आदि से संबन्धित कई

वीभत्स और भयानक लोककथाओं का प्रचलन हुआ। और इन लोककथों के आधार पर पूर्वोत्तर को लेकर एक ऐसी धारणा बनी,जिसने इस क्षेत्र की गलत छवि प्रस्तुत की।

पूर्वोत्तर भारत की लोककथाओं के पुनरलेखन की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए पूर्वोत्तर भारत की लोककथाओं को अतिरिक्त पठन सामग्री के रूप में संयोजित करने का प्रस्ताव लिया है। पूर्वोत्तर की लोककथाओं के साथ न्याय करने के उद्देश्य से पूर्वोत्तर के विद्वानों से संकलन का काम किया गया है और यह काम सम्पन्न भी हो गया है।

**डॉ. रीतामणि वैश्य**

संपादक

शोध-चिंतन पत्रिका